कृषि आधारित उद्योग अपनाने के लिए आवश्यक सावधानियाँः जालोर जिले के विशेष सन्दर्भ में

*डॉ. आर.एन. शर्मा
**दिनेश कुमार साहू

प्रस्तावना

कृषि आधारित उद्योग तुलनात्मक रूप से कम निवेश वाले ग्रामीण क्षेत्रों में आय स्थापित करने और रोजगार प्रदान करने वाले होते हैं। ये उद्योग कृषि–आधारित कच्चे माल के प्रभावी और कुशल उपयोग की सुविधा प्रदान करते हैं। कृषि आधारित उद्योग ग्रामीण क्षेत्रों में एक औद्योगिक संस्कृति का संचार करते हैं और इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में आधुनिकीकरण और नवाचार लाते हैं। कृषि आधारित कुछ उद्योगों जैसे प्रसंस्कृत खाद्य और खाद्य पदार्थों में जबरदस्त निर्यात क्षमता है। विकास प्रक्रिया में ग्रामीणों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए कृषि विकास प्रक्रिया में ग्रामीणों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए कृषि आधारित उद्योगों की स्थापना समय की जरूरत है।

हाल ही में कृषि आधारित उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए अनेक सरकारी योजनाओं की शुरूआत की गई है, जिसमें प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, स्टार्टअप आदि प्रमुख हैं। साथ ही, कृषि आधारित उद्योगों हेतु नई–नई प्रौद्योगिकीयां, तकनीकियां एवं उन्नत मशीनें विकसित की गई हैं। परिणामस्वरूप ग्रामीण युवाओं व किसानों की स्वरोजगार के साथ–साथ आय बढ़ाने और उन्हें आर्थिक व सामाजिक सुरक्षा देने में मदद मिली है।

अध्ययन क्षेत्र

जालोर जिला देश के सबसे बड़े राज्य राजस्थान का एक महत्वपूर्ण जिला है इसका अक्षांशीय विस्तार $24^0 37'$ से $25^0 49'$ उत्तरी अक्षांशों के बीच एवं देशान्तरीय विस्तार $71^0 7'$ से $72^0 58'$ पूर्वी देशान्तरों के बीच स्थित है। जिले का क्षेत्रफल 10640 वर्ग कि.मी. है। जालोर जिला जोधपुर, पाली, बाड़मेर व सिरोही जिलों से सीमा बनाता है साथ ही गुजरात राज्य से भी इसकी सीमा मिलती है। जिले में प्रमुख मृदाएँ दोमट, बलुई दोमट, काली मिट्टी व खण्डा हैं। जिले का अधिकांश भाग चतुर्थ युगीन व अभिनूतन जमावों से आच्छादित है। ये जमाव वायु परिवहित वायुरेत (बालू) नवीन कछारी मिट्टी, प्राचीन कछारी मिट्टी तथा ग्रिट के रूप में जिले के अधिकांश धरातल पर दिखते हैं। जिले में औसत वार्षिक वर्षा 43 सेमी. होती है वन क्षेत्र में खेजली, बबूल, नीम, केर, सरगुडा, जाल गूदी, रोहिड़ा आदि के वृक्ष हैं।

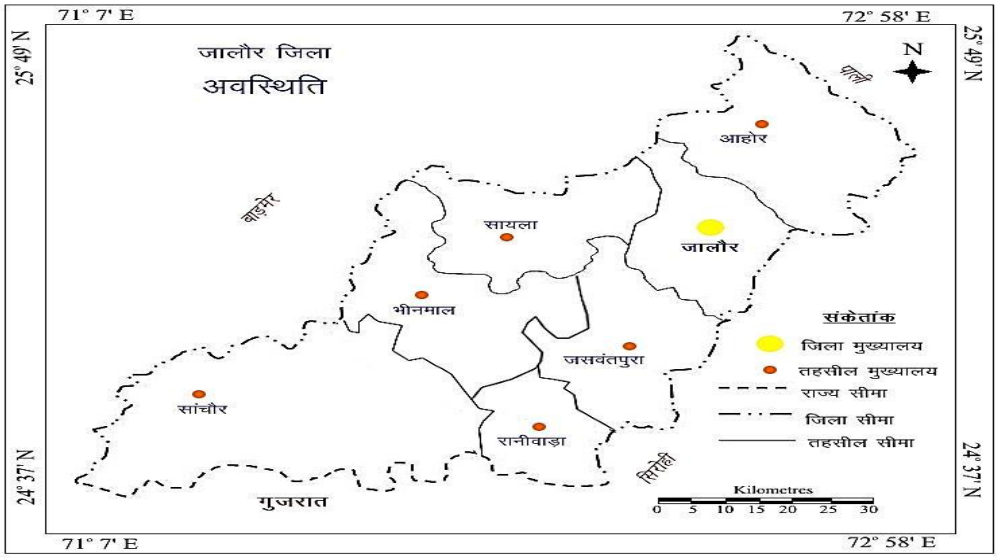

मानचित्रः जालोर जिले की अवस्थिति

उद्देश्य

1. अध्ययन क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योगों की जानकारी इकट्ठा करना।
2. कृषि आधारित उद्योगों के लिए आवश्यक दशाओं का पता करना।

परिकल्पना

1. किसी भी कृषि आधारित उद्योग को लगाने के लिए आवश्यक सावधानियाँ रख कर औद्योगिक उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

शोध विधि

उक्त अध्ययन में उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए विषय पर उपलब्ध साहित्य से सम्बन्धित पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रतिवेदनों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र की सूचनाएँ सरकारी कार्यालयों से एकत्रित करके विश्लेषित की गयी है। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु सामग्री तथा आंकड़ों का एकत्रीकरण निम्नलिखित स्त्रोतों से किया गया हैः

1. **प्राथमिक स्त्रोतः** इस सम्बन्ध में अनुसूची, प्रश्नावली, कार्यकरण तथा परिचर्चा के बारे में व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से उपयोग किया गया है।
2. **द्वितीय स्त्रोतः** इस सम्बन्ध में प्रकाशित व अप्रकाशित सामग्री, पत्र–पत्रिकाओं, लेखों, उद्योगों की सूचनाओं का उपयोग किया गया है।

कृषि आधारित उद्योगों को अपनाते समय निम्नलिखित आवश्यक सावधानियाँ

1. श्रण व्यवस्थाः

रोजगार सृजन में कृषि आधारित उद्योगों की बहुत बड़ी भूमिका होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि आधारित उद्योगों द्वारा ग्रामीण युवकों को कम पूंजी से भी रोजगार मिल सकता है। कृषि आधारित उद्योग–धन्धों हेतु संसाधन जुटाने के लिए पूंजी व्यवस्था करने में ग्रामीण बैंकों के साथ–साथ सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की कृषि विकास शाखाओं एवं सहकारी समितियों का बहुत बड़ा योगदान होता है। सिरोही जिले में विभिन्न बैंक जैसे राजस्थान मरूधरा ग्रामीण बैंक, सेन्ट्रल कोपरेटिव बैंक लिमिटेड, आरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, कोरपो बैंक एवं सहकारी समितियाँ इस क्षेत्र में कार्यरत हैं।

2. कृषि आधारित उद्योगों का चुनावः

किसी भी उद्योग की स्थापना से पूर्व लाभ की मात्रा का ध्यान रखा जाता है। कृषि आधारित उद्योग प्रारम्भ करते समय भी यही व्यावसायिक दृष्टिकोण होना चाहिए। प्रत्येक निर्णय लेते समय व्यावसायिक पहलुओं पर अवश्य ध्यान देना चाहिए। सर्वप्रथम अपने संसाधनों के अनुरूप कृषि से सम्बन्धित उद्योग का चुनाव करें ताकि उपलब्ध संसाधनों का प्रभावी व वैकल्पिक उपयोग करके कम लागत से प्रति ईकाई अधिक लाभ कमा सकें। अध्ययन क्षेत्र में इसके अलावा सम्बन्धित उद्योगों से प्राप्त उत्पादों का अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए स्थानीय बाजार में इनकी मांग को सुनिश्चित करके ही इन उद्योगों की शुरूआत करने पर बल दिया जाता है।

3. जमीन व पूंजी की उपलब्धता के अनुसार ही कृषि उद्योग लगाएँः

कृषि आधारित उद्योगों के लिए अन्य संसाधनों के साथ–साथ जमीन व पूँजी महत्वपूर्ण घटक है। अतः जिन के पवास पर्याप्त जमीन एवं पूंजी है, उनके लिए तो उद्योग लगाने में समस्या नहीं आती लेकिन जिनके पास ये व्यवस्थाऐं नहीं है वह भी कृषि आधारित उद्योग हेतु जमीन को पट्टे पर ले सकते हैं। सिरोही जिले में बटाईदारी या हिस्सेदारी पर कृषि आधारित ऐसे उद्योग लगाते हैं जिसमें जमीन की जरूरत नही के बराबर होती है, कम जमीन वाले किसानों का समूह नही के बराबर होती है, कम जमीन वाले किसानों का समूह सहकारी या सामूहिक उद्योगों को विकल्प के रूप में अपना सकता है।

4. लाभ–लागत अनुपात का ध्यान रखा जायेः

दूसरे उद्योगों की भांति कृषि आधारित उद्योग में लगाई गई लागत के द्वारा सम्भावित उत्पादन पर ध्यान देना ही कृषि का असली औद्योगिकीरण है। कृषि आधारित उद्योगों के चुनाव के समय पूंजी की उपलब्धता को ध्यान में लगाई जाने वाली लागत को तब तक बढ़ाते रहना चाहिए, जब तक लागत की प्रति इकाई पर लाभ होता रहे और अधिकतम लाभ पहुंचाने पर लागत को बढ़ाना बन्द कर देना चाहिए।

5. सरकारी योजनाओं का लाभ उठाएँः

अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीणों, किसानों, पशुपालकों व बरोजगार युवाओं को इस बात की जानकारी देनी चाहिए कि कृषि आधारित उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए कौन–कौनसी सरकारी योजनाऐं, सब्सिडी तथा सुविधाऐं उपलब्ध हैं। सरकार द्वारा उपलब्ध सुविधाओं में कृषि आधारित उद्योगों के लिए कम अवधि के ऋण तथा भारी मशीनों के लिए कम ब्याजदर व आसान किश्तों पर ऋण सहजता से उपलब्ध कराए जाते हैं। कृषि आधारित उद्योगों की सुविधाओं के विकास के लिए मशीनों की खरीद, प्रशिक्षण, बिजली, पानी, शेड या सड़क के निर्माण आदि के लिए सरकार द्वारा ऋण की सुविधा के साथ–साथ अनुदान भी मिलता है।

6. तकनीकी प्रशिक्षणः

वर्तमान समय में विभिन्न सरकारी, गैर सरकारी संस्थाऐं व बैंक किसानों, युवाओं व ग्रामीणों की सहायता के लिए कार्य कर रहे हैं। जालोर जिले में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् व राज्य कृषि विश्व विद्यालयों द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्रों की स्थापना की गई है इन केन्द्रों पर कार्यरत वैज्ञानिक समय–समय पर कृषि उद्योगों के लिए तकनीकी प्रशिक्षण देते हैं। खाद्य प्रसंस्करण विभाग द्वारा फल व सब्जियों के मूल्य संवर्धन व परीक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए साहित्य व पेम्पलेटों के निःशुल्क वितरण के साथ–साथ प्रशिक्षण भी दिया जाता है। इसके अलावा केन्द्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, राज्य सरकारों द्वारा भी कृषि आधारित उद्योगों के बारे में युवाओं को प्रशिक्षण दिया जाता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कई ऐसे कृषि आधारित उद्योग हैं, जिनमें थोडी सी मेहनत एवं प्रशिक्षण प्राप्त करके ग्रामीण स्तर पर स्वरोजगार आरम्भ किया जा सकता है। ग्रामीणों को चाहिए कि किसी भी उद्योग को शुरू करने से पहले उसके बारे में सम्पूर्ण जानकारी हासिल कर लें। इसके लिए तकनीकी प्रशिक्षण की भी अत्यन्त आवश्यकता है।

निष्कर्ष

अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न योजनाओं व जानकारी के आधार पर कोई भी व्यक्ति यह निर्णय कर सकता है कि कृषि–आधारित उद्योगों में से अपनी परिस्थिति के अनुसार वह कौन से उद्योग को अपनाकर अपनी आजीविका चलाने के साथ–साथ लाभ भी कमा सकता है। इसके अलावा, इन उद्योगों की शुरूआत करने से पहले किन–किन बिन्दुओं पर विचार करना आवश्यक है। सरकार द्वारा कौन–कौन सी योजनाऐं, सुविधाऐं व अनुदान उपलब्ध कराए जा रहे हैं, ग्रामीण बेरोजगार व्यक्ति स्वरोजगार की तरफ उन्मुख हो सकता है। जालोर जिले में गेहूँ, सरसों, चना, मोठ, जीरा, ईसबगोल, ग्वार, तिल, बाजरा, मूंग, मूंगफली, अरण्डी आदि की खेती की जाती है इनके अतिरिक्त मुख्य उद्यानिकी फसलें टमाटर, मिर्ची, गाजर, मूली, प्याज, मटर, आलू, सोयाबीन, पालक आदि हैं। पशु सम्पदा भी जालोर जिले में सतोषजनक है। अतः इन सभी मामलों व पशु उत्पादन का उपयोग कर कृषि आधारित उद्योग विकसित किया जाना सम्भव है।

***विभागाध्यक्ष**
****शोधार्थी**
भूगोल शास्त्र विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सन्दर्भः

1. शर्मा, एच.एस. एवं शर्मा, एम.एल. (2020), पंचशील प्रकाशन
2. गौतम, अल्का (2020), कृषि भूगोल, शारदा प्रकाशन
3. ओझा, एस.के (2017), कृषि प्रौद्योगिकी, बौद्धिक प्रकाशन
4. जिला उद्योग केन्द्र, जालोर (जिले की औद्योगिक संभावनाऐं) (2017–18)
5. एग्रीकल्चर स्टेस्टिटिक्स एट ए ग्लान्स वर्ष 2018–19